भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में नवोन्मेषी किसान कॉनक्लेव 2025 का समापन सत्र

नई दिल्ली, 24 दिसंबर 2025: भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित नवोन्मेषी किसान कॉनक्लेव 2025 का सफल आयोजन किया गया, जिसका समापन सत्र 24 दिसंबर 2025 को सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन चौधरी चरण सिंह जी की जयंती के अवसर पर किसानों के कल्याण हेतु उनके आजीवन योगदान को स्मरण करते हुए किया गया।

मुख्य अतिथि, डॉ. राज एस. परोदा, संस्थापक अध्यक्ष, ट्रस्ट फॉर एडवांसमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (TAAS), ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए किसान-नेतृत्व वाले नवाचार तथा समावेशी कृषि विकास के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि भारत जैसे किसान विश्व में कहीं और उपलब्ध नहीं हैं तथा नवाचार को कृषि क्षेत्र की एक सशक्त प्रेरक शक्ति बताया। डॉ. परोदा ने रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग में कमी तथा जैव-कीटनाशकों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि जब कृषि को लाभकारी और सतत आजीविका के रूप में देखा जाएगा, तभी इस क्षेत्र के प्रति जन-रुचि में वृद्धि होगी। उन्होंने किसानों, वैज्ञानिकों और संस्थानों के बीच सामूहिक प्रयासों का आह्वान करते हुए कहा कि "विकसित भारत" की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है जब किसान सशक्त होंगे। उन्होंने प्रगति को गति देने के लिए किसान से किसान तक ज्ञान के प्रसार के महत्व को भी रेखांकित किया।

पूर्व प्रधानमंत्री, श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के प्रसिद्ध नारे "जय जवान, जय किसान" का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं, उसी प्रकार किसान देश को भूखमरी से बचाते हैं, जिससे वे राष्ट्रीय प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

डॉ सी. एच. श्रीनिवास राव, निदेशक, आईसीएआर–आईएआरआई, ने भारतीय किसानों की रचनात्मकता, जिजीविषा और व्यावहारिक ज्ञान की सराहना की। उन्होंने बताया कि देश के 25 राज्यों से आए किसानों ने सम्मेलन में भाग लिया तथा अपनी नवोन्मेषी कृषि पद्धतियों, स्वदेशी तकनीकों एवं सफल कृषि मॉडलों का प्रदर्शन किया। उन्होंने किसानों के समक्ष मौजूद जलवायु परिवर्तन, मौसम की अनिश्चितता एवं बाजार से जुड़ी चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए सभी राज्यों में किसान–वैज्ञानिक सहभागिता को सुदृढ़ करने के लिए भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने यह भी कहा कि "विकसित भारत" की परिकल्पना में किसान की केंद्रीय भूमिका है, और कृषि की प्रगति केवल किसानों की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है।

कार्यक्रम के दौरान प्रकाशनों का विमोचन तथा प्रतिभागी किसानों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रमाणपत्रों का वितरण भी किया गया।

सम्मेलन का समापन डॉ. आर.एन. पडारिया, संयुक्त निदेशक (विस्तार), भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में किसानों, वैज्ञानिकों एवं आयोजकों के योगदान की सराहना की।

Valedictory Session of the Innovative Farmers' Conclave 2025 at ICAR–IARI

New Delhi, 24 December 2025: The ICAR–Indian Agricultural Research Institute, New Delhi, successfully organised the Innovative Farmers' Conclave 2025, which concluded with its valedictory session on 24 December 2025. The conclave was organised to commemorate the birth anniversary of Shri Chaudhary Charan Singh and for his lifelong contribution to farmers' welfare.

The Chief Guest, Dr. Raj S. Paroda, Founder Chairman of the Trust for Advancement of Agricultural Sciences (TAAS), addressed the gathering and emphasized the importance of farmer-led innovation and inclusive agricultural development. He stated that farmers like those in India are unparalleled anywhere in the world and described innovation as a strong driving force in agriculture. Dr. Paroda also underlined the importance of reducing chemical pesticide use and promoting bio-pesticides, noting that public interest in agriculture would grow when farming is widely perceived as a profitable and sustainable livelihood. He called for collective efforts among farmers, scientists, and institutions, emphasizing that a "Viksit Bharat" can be achieved only when farmers are empowered. He further highlighted the importance of farmer-to-farmer knowledge sharing to accelerate progress.

Referring to the iconic slogan of Former Prime Minister of India, Shri Lal Bahadur Shastri, "Jai Jawan, Jai Kisan," he remarked that just as soldiers protect the nation's borders, farmers safeguard the nation from hunger, making them indispensable to national progress.

Dr. Ch. Srinivasa Rao, Director, ICAR–IARI, lauded the creativity, resilience, and practical wisdom of Indian farmers. He informed that farmers from 25 states across the country participated in the conclave, showcasing their innovative practices, indigenous technologies, and successful models in agriculture. He underlined the challenges faced by farmers, including climate variability, weather uncertainties, and market-related constraints, and reiterated ICAR-IARI's commitment to strengthening farmer–scientist linkages across all states. It was emphasized that farmers are central to the vision of a "Viksit Bharat", and that progress in agriculture (*krishi*) is possible only through the strength and participation of farmers (*kisan*).

The programme also witnessed the release of publications and distribution of certificates to participating farmers in recognition of their outstanding contributions.

The conclave concluded with a vote of thanks by Dr. R. N. Padaria, Joint Director (Extension), ICAR–IARI, who acknowledged the efforts of farmers, scientists, and organizers in making the event a success.

(Source: ICAR–Indian Agricultural Research Institute, New Delhi)